समीर तांती की चार कविताएं

(असमीया से हिंदी)

अनुवादक: दिनकर कुमार

(1)

धुआँ

मठ मंदिर और दरगाह
मेरे अंदर
अंगड़ाई लेते हैं

कितनी अप्सराएं और गंधर्व
कितने किन्नर-किन्नरी, यक्ष
आकर बैठे हैं साधु संन्यासी, पीर के बगल में

रात ने करवट बदली है
मेरे बदन पर उग आए हैं
हजारों साल के वृक्ष-लता, फूल-पत्ती-जड़ें
पंछी, पशु और सरीसृप के कदम

उड़ रही है हजारों साल की धूल
हजार साल के कीचड़ में
सड़ रहे हैं दोनों पैर
प्राचीन से भी प्राचीन

हाथ में लहू और आंसू की कटोरी
आंखों में लाखों करोड़ों वर्षों का नशा
होठों पर बुत बन चुका होठ का नशा

बोलना चाहता हूं बोल नहीं पाता
दोनों आंखों ने पंख फैला दिया है
जीभ पर अनंत काल की प्यास

तुम मुझे करीब खींचते हो

सुबह हो रही है
मैं नहीं हूं
खाली चटाई

चटाई पर एक मृत रात की गिरी हुई नींद

नींद में निहत चेहरे
मैं प्यार से बटोरता हूं
गिरे हुए मठ मंदिर के पल को
वही मेरी विपन्न काव्यिकता

एक मृत कविता से धीरे धीरे
उतर आई
एक शुद्ध सुबह
हजारों अनाविष्कृत दिनों की अधिविद्या

तुम मुझे पाने के लिए व्याकुल हो उठे हो
मैं जो अभी अधिविद्या के सीने में
कुंडली बनाकर उड़ने वाला धुआं।

(2)

आओ चलते हैं

आओ चलते हैं
दुख विदा जुदाई विदा
हे मेरी ख्याति लाने वाली साजिश
विदा
विदा हे अत्याचार का इतिहास

विदा मेरी अवहेलना करने वाला संभ्रांत समय
मेरे प्रिय मित्र गण विदा

मैं तो सुन रहा हूं
तुम लोगों ने नहीं सुनी है
गमगीन गमगीन

हौले हौले बज रही है वह धुन

रंगीन, बेशकीमती
करो, वहीं बातें करो
जहां इतने दिनों से थे और हो
वही बातें करो

विदा
हे मुझे कर्जदार बनाने वाला अपमान
विदा मेरी वासना का लुभावना भंडार
विदा हे यश और अर्थ की तन्हाई
प्रशंसा और कलंक
तुम लोगों को भी विदा भाई

मुझे रहने दो इसी तरह
इस सरलता की हंसी और नग्न ठिठोली के बीच
जहां प्रत्येक भूख और शोक
भोगाली मेले का आयोजन करते हैं

विदा विदा
मुझे धन्य करने वाले हे मेरे अभाव का मौसम
विदा मेरी समझौता करने वाली मानसिकता
विदा मित्र, तुम लोगों को भी विदा

अभी ही है जाने का समय
अंधेरे के पीछे पीछे
तूफान बारिश का फाटक खोल कर
आनंद के प्राचीन महल की तरफ

जंगल बीहड़ में फैला कर
गुलाबी-पीली धूप

मेरी मिट्टीमय माशूक की
रंगीन प्रीति का उत्सव।

(3)
चलते हैं, आओ

आओ चलते हैं
भूख सलाम, प्यास सलाम
सलाम हे पेट नामक अजगर
सलाम बंजारे बादल, उद्भ्रांत नदी, उन्मादित झरना
हे मेरे उन्मादित सागर तुमको भी सलाम

हे गर्भ तुमसे ही बटोरा था भूख को
क्रमश: टूटता हुआ मिट्टी का शोक
ओ मेरी जुबान, तुमसे ही वह राह, पगडंडी
अन्य एक समय, दु:समय
रोग आक्रांत रात

क्षयशील दोनों हाथों से तोड़कर शिलामय दिन
काटता है प्रत्येक प्रहर
प्रज्वलित अग्नि
सृजन और मनन का
आलोकित मार्ग

तकनीक सलाम ध्वंस सलाम
सलाम हे विभीषिका की इच्छा
सलाम नक्षत्र देश के अधिवासी, आकांक्षित प्रकाश

स्वागत तोरण
अन्य एक समय, अनतिक्रम्य काल, शुद्धता का मौसम

हे यात्रा दो हाथ दो
पार करूं दुख की बोझिल राह
संकट के हजारों तोरण के बीच से
उद्यापन करूं तुम्हें
उत्सव अनादि अनंत काल
क्रमश: उज्ज्वल मुक्त
मेरी प्रज्ज्वलित प्रज्ञा

देश देश में, घर-घर में राह-राह में
आजीवन पड़ताल।

(4)

थोड़ा पानी थोड़ी मिट्टी

थोड़ा पानी, थोड़ी मिट्टी और थोड़ी धूप
उसके बाद प्यार

मैं जहां से आया हूं
और जहां लौट जाऊंगा कल

मुझ पर आरोप लगाने वाले इस विफल दृश्य में
मैं तुम्हें सजा कर रखूंगा फूल की पंखुड़ी की तरह

अभी रोशनी उसके बाद अंधेरा
कल रोशन वह विषाद

नीले नीले मेरे एकाकीपन में
आराम करो

थोड़ा पानी थोड़ी मिट्टी और थोड़ी धूप
उसके बाद जुदाई

मैं खो दूंगा अपनी आवाज
तुम खो जाओगे अपनी छाया में

हरियाली ढूंढेंगी इस जुबान पर
जुबान माफी मांगेगी सूरज से

उसके बाद कोई किसी को नहीं देखेगा
कोई किसी को याद नहीं रखेगा

नीली-नीली मेरी बारिश में
एक बार नग्न बन जाओ

थोड़ा पानी थोड़ी मिट्टी और थोड़ी धूप
उसके बाद भिक्षा
हवा ने जहां सुरों को बटोरा था
और जहां जाकर पहेली बनेगी

मुझे आज गलत मत समझना
मैंने तुम्हें भी गलत समझना सीखा नहीं

चारों तरफ कब्रें उसके बाद हंसी
फिर वही कब्र हमारी आखिरी मुलाकात

नीला-नीली मेरी नग्नता में
एक बार चांदनी बनो

थोड़ा पानी, थोड़ी मिट्टी और थोड़ी धूप
कितनी खूबसूरत यह धरती।

(लेखकीय परिचय: समीर तांती असमिया भाषा के सुपरिचित कवि हैं। इनकी कविताओं का हिंदी अनुवाद दिनकर कुमार द्वारा किया गया है। दिनकर कुमार असमिया-हिंदी के अनुवादक हैं। यह मूलतः हिंदी के चर्चित कवि हैं। वर्तमान में गोवाहाटी, असम में रहते हैं।)